श्री मैथिली विजयते

मैथिली-सन्देश

(विविध लेखक क आधुनिक गीतसंग्रह)

प्रकाशक

मैथिली-साहित्य-समिति काशी
हिन्दू विश्वविद्यालय

मुद्रक-
दुर्गाप्रसाद खत्री
लहरी प्रेस, काशी

प्रथमावृत्ति १००० मूल्य -)

समाज सँ अनुरोध

मैथिली-साहित्य-समिति क उद्देश्य महान आदर्श आदरणीय अछि। समिति क सञ्चालक लोकनि क श्रमदेखि पूर्ण विश्वास होइछ जे-ई लोकनि सदा सावधानता-पूर्वक सोत्साह निःस्वार्थभावैं कार्यकरैत जयताह।

अतएव प्रत्येक मैथिल महानुभाव सँ एहि समिति कें यथाशक्ति सहयोग-प्रदान करबाक सानुरोध प्रार्थना! जाहि सँ शोर्ण प्राय मैथिली साहित्य क शरीर में पुनः नव-जीवन-सञ्चार हो।

श्री बालकृष्ण मिश्र (हि. वि.)
वि. वाइस प्रेन्सपल
१-चन्द्रशेखर झा
,, बालबोध मिश्र-(प्रोफेसर
गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज
,, लक्ष्मीनाथ झा—प्रोफेसर
हिन्दु विश्वविद्यालय
,, गेनालाल चौधरी
,, राधाकान्त झा

श्री मुकुन्द झा बक्सी (म. म.)
,, मधुसूदन झा—महामहोपदेशक, जयपुर राज
पण्डित, विद्यावाचस्पति
,, सहदेव झा
२ चन्द्रशेखर झा
,, सीताराम झा

जानकि जननि देवि ? मिथिले ? विजयहो।
सन्तान विद्वान सभहो अहांकेर,
अतिशय सदाचार भूषित विनय हो।
सीताक सम शुद्ध अतिउच्च पति प्रीति
सहिते सबहि कन्यकाहुँक उदय हो।
सभहो अयाचीक सम याचनाहीन,
गुरुपाप सन्तापलोभक विलय हो।
पारसपरिक द्वेष विषवृक्ष कें, काटि
सभलोक "आनन्द" आनन्दमय हो।

'आनन्द झा न्यायाचार्य्य, सिंहवाड़'

जननी समुचित नहिं थिक देरी
देखू दशा दीन मिथिलाकेर ह्वैछ अनेक अन्हेरी
ब्राह्मण, क्षत्रिय, कुल गौरव तजि, परथि विविध दुख फेरी
उज्वल मुख काजर सौं लेपिय, छथि-अपमानक ढेरी
कहथि "चन्द्र" कल जोरि तेहि पद करिय अनुग्रह फेरी

—उमेश चन्द्र झा० हि० वि० वि० काशी।

३. भेल सबठां जागृतिक सञ्चार एहि संसार में।
किन्तु मैथिल! छी अहीं आलस क भण्डार में॥
ज्ञानमें, विज्ञानमें, सुध्यानमें, सम्मानमें—
नाम छल, पुनि आइछी-अपरोजकक आकारमें॥
विश्वमें जनिकर पताका ऊंच भै फहराइ छल।
से-अहाँ मूड़ी झुकौने की झंखैछी आड़में?॥
कुम्भकर्णी नीन्द जौं आबहुँ तजी प्रियबन्धु गण!
मैथिली-उपहार देखी, तखन सोनक थारमें॥

श्रीचन्द्रकान्त मिश्र मिश्रौल

४ बाबू उठू विचारू के छी? अँहा कतय छी।
कनियों नयन उठाऊ, मिथिला दशा निहारू?॥
अंह हंस केर राजा, घोडसार में पड़ल छी।
अँह सिंहसौं बली भै, पिजड़ा में हा! सड़ै छी॥
अँह वीर अर्जुने सन, अति धीर कृष्णहिं क सन।
निज बाहुबल विचारू, रक्षा करू जगत के॥
कटि गेल चिन्ह सब टा, बाँकी रहल शिखा टा।
तकरो तँ आब राखू, कुल गौरवों कें झाँकू॥
के छल जगत में अंहसन, विद्या, विवेक, बलमें?।
एखनौं अँहा अँही छी, की निन्द में पड़ल छी?॥
आहुँब रहब विलासी, छोड़ब न द्वेष-राशी।
"चन्दिर" कहय विचारी, तौं हाथ रहतै खाली॥

देवचन्द्र झा "चन्दिर" हि० वि० वि० काशी।

(५)

उठू मैथिलभाइ! विचारी उठूमैथिलभाइ विचारी?
जल्दी करू अहां तैआरी उठू मैथिलभाइ! विचारी?
दीनदशामे आबि कनैअछि भाषा अहाँकबेचारी उठू मैथिलभाइ०
जकरहिं सं सभ काज चलै अछि अतिशय अछिहितकारी। उठूमैथि०
तकरासं किए मूहमोड़ैछी? भैओकै अधिकारी—उठूमैथिल०
अपनो भैं नहिं यदि हेरवतँ नहि हटत एकरदुखभारी। उठूमैथि०
ई अवनति-खतहिंमेंजाइछ बनूएकर उद्धारी। उठूमैथिल०
मैथिलि साहित्य समिति उठल अछि होउएकर सहकारी उठूमै०
आबहुँ नहियदि छोड़ब आलस अछि अहंकैं वलिहारी। उठूमै०

श्री आनन्द झा० न्या० आचार्य

(६)

उठू मैथिल युवक जागू, बनाऊ मौलि मिथिला कें।
हटाऊ द्वेष घर घर सँ, बढ़ाऊ मान मिथिला के॥
पढाऊ पाठ विद्यापति, अजाची मिश्र मण्डन के।
लिखू लय लेख लखिमा के, गहू आचार मिथिला के॥
सरस संगीत अभिलाषी, विलासी यदि बनय चाही।
गवाऊ गीत गीता के, बढ़ाऊ धर्म मिथिला के॥
छली विदुषी जतय वनिता, सती सहधर्मिणी सीता।
ततय नहिं साक्षरा एको, 'विमल" ई हाल मिथिला के॥

वामदेव मिश्र "विमल"

(१) जानकि जनम भूमि मिथिलाक जयहो ।
जनमथि जनक फेरि ज्ञानी प्रजापाल-
श्रीराम सीता क फेरो प्रणय हो ॥
हो कण्व मुनितुल्य गृहिरत्न गृहिणी,
मण्डन-प्रिया और लखिमा उदय हो ॥
गौरी समा होथि कन्या सुकन्या,
सात्विक क्रियावान नैष्ठिक तनय हो ॥
बाल्मीकि, स्मृतिकार. गौतम, हरष चन्द्र,
कवि कोकिल क फेर शुभमय विजय हो ॥
धीमान ओ मूढ़ शिशु ओ युवक बूढ़.
सभ मातृ-भाषा क सेबा में लयहो ॥
निज देश भाषाक सेबा निरत ईश,
हंसइत "किरण" केर शुभमय निलय हो ॥
श्रीकाञ्चीनाथ झा "किरण" ।

(2) उठू मैथिल जागु अबेर भयगेल !
देखू आंखिकेंखोलिकतबेरभयगेल ?
मैथिली साहित्य उपवन केर ऊपर लालिमा ।
उत्साह सूर्य्यक है छ शोभित आबगेल ओ कालिमा ॥
कवि कोकिल आबि करय कल खेल,उठू मैथिल जागु अबेर भयगेल
किरण अनुखन बाढ़ि भय धारण करै अछि उग्रता—
"उठि जाथु मैथिल बन्धु-गण " ई छैक एकरा व्यग्रता ॥
कहू कान अपन किए मुनिलेल ? उठू मैथिल जागू अबेर भयगेल ।
आलस्य शय्या छोड़ि, जल्दी-आउ नव-संसार में ।
जागृतिक परिचय दिअऽ साहित्यकेर प्रचार में—
एतेजीवन व्यर्थ अहांकय लेल ! उठूमैथिल जागु अबेर भयगेल !!
आब शोच विचार सबहिं भयगेल ! उठूमैथिल जागु अबेर भयगेल ।
श्री आनन्द झा, न्यायाचार्य्य । सिंहवाड़

(९) मिथिलाक पूर्वगौरव नहि ध्यान टा धरैछी ।
सुनि मैथिली सुभाषा विनु आगियें जरैछी ॥
सूगो जहांक दर्शन-सुनबैत छल, तहीं ठाँ ।
हा ! आइ "आइ गो" टा पढ़ि उच्चता करैछी ॥मिथिलाकपूर्व०॥
हम कालिदास, विद्या-पति-नामछाड़ि मुह में—
"बाड़ीक तीत पटुआ" सभ वंकिमैं धरैछी ॥मिथिलाक पूर्व०॥
भाषा तथा विभूषा अछि ठीक अन्यदेशी !
देशीक गेल ठेसी !! की पांक मे पड़ै छी ? ॥मिथिलाक पूर्व० ॥
औ ! यत्र तत्र देखू अछि पत्र सैकड़ो टा ।
अछि पत्र मैथिली में, एको न, तैं डरैछी ॥मिथिलाक पूर्व० ॥
—श्री काशीकान्तमिश्र, कोइलख ।

(१०) शुभद थिक युवक-जनक उल्लास ।
सुनु मैथिल ! मिथिला-भाषा केर करु कविता क विकास ॥
अछि प्राचीन नवीन कवि क जे करु तहि सभ क प्रकाश ।
भाषा 'पत्र' प्रकाश करू झट मैथिलजनक विलास ॥
अपन अपन कविता क चमत्कृति लेखक करु अभ्यास ।
पुरत सभक मन-काम करी जनु एहि में हानिक त्रास॥शुभदथि०
आबहुँ होउ सकल मैथिल मिलि अपनो देशक दास ।
उद्योगैं, सब पुरत मनोरथ जनु क्यौ होइ निराश ॥शुभदथिक०॥
श्री 'मुकुन्द'कह सफलित निश्चय धर्मक कृति आयास॥शुभदथि०

पं० श्री मुकुन्द झा (श्रोत्रिय)

जगमें सभसौं पछुआयल छी, मैथिलगण ! आबहुँ आगुबढ़ू ।
निज अवनति-साधक बाधिक मैं मिलि उन्नतिशिखरक उपर चढ़ू ॥
अछि 'हाँइ हाँइ' कै लागि पड़ल सभ अपना अपना उन्नति में ।
उत्थानक एहि सुभग क्षण में 'घरवैसि अहीने' बात गढ़ू ॥जगमें०
"राणाप्रताप,शिवराज,तिलक" हिनका लोकनि क जीवन-कृति सौं
तजि आलस कें प्रियबंधुवृन्द ! किछु सेवाभावक पाठपढ़ू ॥जगमें०
"भाषा, भूषा ओ भेष अपन हो जगजियार भरि जगभरि में !
ई अटल प्रतिज्ञा ऐखन कै, पुनि मातृभूमि पर सोनमढ़ू ॥जगमें०
—श्रीवैद्यनाथ "वैदेह" तरौनी ।

यदि मैथिलयुवक आवनहि हयता फांड़ बान्हि कें ठाढ़ ।
'टक टक' तकैत, एहिना भखैत, पौता विपति अतिगाढ़ ॥
करता न गाम गाममें उपदेश आब जौं ।
जनता सभ होएत म्लेच्छ, घुमै अछि बहुत विधर्मी चांढ़ ।
एके उदैन बौद्ध धर्म देल नाश कै ॥
एतेक गोटे मिथलाक युवक छी, हम की भय गेलहुँ माढ़ ? ।
औ ! कार्य्यक्षेत्र में चलू उत्साह कें करू ? ॥
औलोकनि ! कटौने मोंछ हैत की वा बढ़ौने दाढ़ ॥
श्री काशीकान्त मिश्र–कोइलख ।

(३)
भगवन् ! हमर ई मिथिला सुख शान्ति केर घर हो ।
आदर्श भै सभक ई इतिहास में अमर हो ॥
जहि ठाम जाइ हम सभ, सिंहे तहाँ कहावी ।
दुर्दान्त होइ सभठाँ केवल अहाँक डर हो ॥ भगवन् ! हमर०

जग भरि सुनी नचारी, तिरहुत, महेशवानी ।
सभ केर कण्ठपथ में मृदु मैथिलीक स्वर हो ॥ भगवन् ! हमर०
अत्यन्त शक्तिशाली जे द्वीप अछि तहू पर ।
एहि देश केर भाषा, ओ भेषहु क असर हो ॥ भगवन् ! हमर०
पसरय एतय यथोचित अभिनव कला-कुशलता ।
प्रतियोगिता क रण में ई प्रान्त अग्रसर हो ॥ भगवन् ! हमर०
अन्तिम विनय दयालो ! बस आब एकटा, जे-
ई पाग विश्वभरि में सभकेर माथ पर हो ॥ भगवन् ! हमर०
–श्री वैद्यनाथ मिश्र "वैदेह" तरौनी ।

(४)
मिथिला क दुर्दशा जँ, नहि दूर कय सकी तँ
विद्वान ओ धनिक भय, बाते बनाय की हो ।
अपना बुतयँ होअय जे, कय जाउ बेरिमें से
जरि जाय जें जजाते, करिने पटाय की हो ।
दुःखी समाज अछि जा बान्ही बखार ने–ता
काने कटाय ली तँ, कुण्डल गढ़ाय की हो ।
निज भेष ओ विभूषा, सँ पीठओड़ि बैसी
बाजी न मैथिली तँ, मैथिल कहाय की हो ।
धिक व्यर्थ देश-सेवा, यदि होय एकते ने
अद्धी न हाथ पर तँ, बहुए सिआय की हो ।
नहि कय स्वजाति-सेवा, नेतावनी कथीलय
यदि आंखि ने रहय तँ, चशमे चढ़ाय की हो ।
घसमोड़ि की पड़ल छी, माताक दुःख-दिन में

घर में बसकि रही तँ, पैघे कहाय की हो।
श्रीहेमपति चरण में, माथा नमाय मनसँ
पूजा न हम करी तँ, दोसर उपाय की हो।

श्रीश्यामानन्द झा

फेरि मिथिला-कोड़ में, सीता क उदय हो
सङ्गठन ओ प्रेम सँ, सर्वत्र विजय हो।
जीवन क सञ्चार हो प्रत्येक प्राण में
समय जाय सर्वदा, मिथिला क त्राण में।
आलस्य, मिथ्या, द्वेष, आदि क शीघ्र विलय हो
मैथिली—भाषा क भारत-वर्ष निलय हो।
त्याग, ओ सेवा क भाव बढ़य आर्य्य में
सबहिं लागि जाइ आब एक कार्य्य में।
सिद्धान्त और यत्न विना, सिद्धि कतय हो
अपन रक्षा नीक जकाँ अपनहि बुतय हो।
मैथिली-साहित्य चर्चा, जतम ततय हो
देश में सुख-शान्ति और समृद्धि निचय हो।
शीघ्र मैथिल—मातृ—भूमिक उग्र शक्ति हो।
२ श्रीहेमपति क पैर में प्रगाढ़ भक्ति हो

श्रीश्यामानन्द झा

हे मैथिली ! करुणाकरू पथ-हीन मैथिल भाय पर।
मिथिला क गौरव छलजते से आब अछि डुबिजाय पर।
इंग्लिस तथा हिन्दी छटैछथि मातृ—भाषा छाड़ि कय
तेजि फूल क सेज बाबू निन्द लेथि चटाय पर।
देश–सेवावेरि में तँ सोम होथि छदाम लय
बन्धकी गहना रखैछथि पान, जरदा, चाय पर।
अछि जे-अपन भूषण, बसन, दुसिदेथि तकरादे विक्रय
लोट-पोट रहैत टाछथि टोप ओ नेकटाय पर।
कान लेथि छिपाय झट विद्यापति क शुभ-नाम सँ
सर्वथा तन, मन, धनैंछथि मुग्ध टालस्टाय पर।
कहिदेथि बहुतो व्यक्ति अवनति भेलजाइछ देशमें
किन्तु समुचितरूपसँनहि ध्यानदेथि उपाय पर।

श्रीश्यामानन्द झा

रमानन्द झा 'रमण'
रिजर्व बैंक, पटना

सहयोगी बन्धुगण !

मै० सा० स० क ध्ये नाम सँ स्पष्ट अछि। किन्तु ध्ये तेहन जटिल छैक सिद्धि में सन्देह भय रहल अछि।

'अत्युक्तौ यदि न प्रकुप्यसि मृषा-वादं न चेन्मन्यसे'

तँ विश्व-भाषा संस्कृत-भाषा क अपेक्षया प्राचीने मैथिली थिक। एतावता एदिदुनू में लघु-गुरु भाव कहबाक अभिप्राय-नहि। प्राणतोषिणी सँ लिपि क उद्धार कयला पर मैथिली लिपि उद्धत भय जाइत अछि एहिस्थिति में भाषो प्राचीने? हेतु जे लिपि ओ भाषा समानकालिक थिक। नामहुँ सँ इतिहासक पता लगैत अछि तदनुसार प्राकृत-भाषा प्रकृत्या आविर्भूत थिक प्राकृत भाषाक प्रायःप्रत्येक प्रयोग क अनुकूल मैथिली क प्रयोग अछि-इत्यादि गवेषणा सँ उपर्युक्त विषय कल्पना नहि कहाय सकैत अछि।

खेद थिक जे अतीत महान महान व्यक्ति अपन भाषा क साहित्य दिश कनडेरियो ध्यान नहि देलन्हि आधुनिको विद्वान छी-छै, सैह बुझैत छथि। एहिभाषा में रचना करब अभिमान क विरुद्ध छैन्हि। आर्थिक-कष्ट तँ देश व्यापी भय रहल अछि इत्यादि विड़म्बना सँ एहिसमिति क उद्देश्य-सिद्धि मैथिलत्वाभिमानी प्रत्येक प्राणी क आर्थिक ओ शारीरिक विपुल सहायता बिना कठिन। तँ छोट सँ पैघ तक आर्त वाणी, पहुँचयबा क हेतु प्रस्तुत पुस्तिका प्रकाशित भेल अछि अतएव साहित्य दृष्टि सँ एकर समालोचना करब कथमपि उचित नहि कहाय सकैत अछि। अन्त में निवेदन जे से शोधन क भार एहि दुर्बल कन्धापर देलगेल छल किन्तु अनेको कारणें भाषा मार्जित नहि भय सकल तदर्थ क्षमाभिक्षुक छी।

श्रीश्यामानन्द झा